घ– णिजन्त क्रिया का प्रयोग — तीन वाक्य
ङ.– शतृशानचकृदन्तप्रयोग — तीन वाक्य
च– क्त्वा–ल्यप्कृदन्तप्रयोग — तीन वाक्य
छ– क्तेवतु–तुमुनाम्तप्रयोग — तीन वाक्य

4 कर्मवाच्य में छः लघुवाक्यों का प्रयोग :
इनके लिए केवल कृत्य तथा क्तप्रत्ययान्तों और लट् लकार की भाव –कर्मक्रिया का ज्ञान तथा प्रयोग अपेक्षित है ।

5 कर्म आदि अन्य कारकों तथा विशेषणों से सम्बन्धित विभिन्न लिंगोंके 6 पदों वाले पांच वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद
कर्तृवाचक पद को छोडकर शेष प्रत्येक पद के लिए

5 मिश्रित पदों वाले 5 वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद

6 क–चार में से तीन गद्य भागों का संप्रसंग हिन्दी में अनुवाद – 10 (15)
ख– पांच में से तीन श्लोकों का संप्रसंग हिन्दी में अनुवाद – 10 (15)

परीक्षक के लिए निर्देश :

1. परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करे ।
2. छात्रों की सुविधा के लिए विकल्प दो गुणा दिए जाये ।

चतुर्थ पत्र : दर्शन

पूर्णांक
रेगुलर – 80
प्राईवेट – 100

पाठ्यक्रम :

1	तर्क संग्रह : दीपिका टीका सहित	40 (60)
2	ईशावास्योपनिषद्	15 (15)
3	श्रीमद्भगवद्गीता	25 (25)

परीक्षक के लिए निर्देश :–

1 परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करे ।

2 सभी प्रश्नों में दो विकल्प दिए जायें ।

प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष

प्रथम पत्र : व्याकरण

पूर्णांक
रेगुलर – 80
प्राईवेट – 100

वरदराजकृत सिद्धान्त कौमुदी के निम्न प्रकरण

1	क	गण	35 (40) अंक
	ख	प्रक्रियाएँ	15 (20) अंक
	ग	कृदन्त	20 (30) अंक
2	लिंग अनुशासन		10 (10) अंक

अंक विभाजन :–

भाग 1 क 1 गण–10 में से 5रूपों की सिद्धियाँ 15 (20) अंक

	2 सूत्र– 4 में से 2 सूत्रों की व्याख्या	10 (10) अंक
	3 रूपावली– 15 से 10 रूपावलियां	10 (10) अंक
ख	1 प्रक्रियाए–10 में से 5 रूपों की सिद्धियां	10 (15) अंक
	2 सूत्र – 4 में से 2 सूत्रों की व्याख्या	5 (5) अंक
ग	1,10 में से 5रूपों की सिद्धियॉं	10 (15) अंक
	2. 4 में से 2 सूत्रों की व्याख्या	10 (15) अंक
भाग 2	10 में से 5 रूपों की सिद्धियां	10 (10) अंक

परीक्षक के लिए निर्देश :–

1 परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करें ।

2 सभी प्रश्नों में दो विकल्प दिए जायें ।

द्वितीय पत्र : काव्य ,नाटक तथा अलंकारशास्त्र

पूर्णांक
रेगुलर – 80
प्राईवेट – 100

क	कुमार सम्भव – प्रथम एवं द्वितीय सर्ग	30 (40) अंक
ख	भारत–विजय–नाटकम् । लेखक–मथुरा प्रसाद दीक्षित	25 (30) अंक
ग	काव्यदीपिका–केवल चतुर्थसे अष्टम शिखातक अंक विभाजन	25 (30) अंक
क	कुमार सम्भव :–	
	1 चार में से दो पद्यों का सप्रसंग सरलार्थ	15 (20) अंक
अंक		
	2 दो में से एक आलोचनात्मक प्रश्न	10 (15) अंक
	3 दो में से एक सूक्ति की व्याख्या	5 (5) अंक
अंक		
ख	भारत–विजय–नाटकम् :	
	1 पांचं में से तीन श्लोकों का सदर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद तथा भावार्थ स्पष्ट करना	12 (15) अंक
अंक		
	2 क–पांच संस्कृत गद्य वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद	5 (5) अंक
	ख–छः समस्त पदों का विग्रह	3 (3) अंक
	3 समीक्षात्मक प्रश्न	5 (7) अंक
ग	काव्यदीपिका :	
	1 चतुर्थ से सप्तम शिखा तक तीन में से दो प्रश्न । पाठ्यकम– काव्यभेद, नाटक , पूर्वरंग, तथा नान्दी, प्रस्तावना और उसके भेद,विष्कम्भक आदि अर्थोपक्षेपक नाट्योक्तियॉं महाकाव्य सहित श्रव्यकाव्य के भेद काव्यादोष ,काव्यगुण तथा रीति ।	10 (14) अंक

नोटः— काव्यदोषों के सामान्य परिचय के साथ पद, वाक्य अर्थ तथा रसदोषों के मात्र एक–एक उदाहरण अपेक्षित हैं ।
2 अष्टम शिखा । परिशिष्ट भाग को छोडकर ।
छः में से चार अलंकारों के लक्षण, अर्थ, उदाहरण तथा समन्वय । 15 (16)अंक

परीक्षक के लिए निर्देश :–
1 परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करें ।
2 सभी प्रश्नों में दो विकल्प दिए जायें ।

तृतीय पत्र : अनुवाद , रचना तथा गद्य

पूर्णांक
रेगुलर — 80
प्राईवेट — 100

क– पदज्ञानपूर्वक वाक्यज्ञान एवं संस्कृत में अनुवाद	40 (50) अंक
ख– संस्कृत में अपठित और स्वरचितअनुच्छेद–लेखन	5 (10) अंक
ग– संस्कृत में पत्र लेखन	5 (5) अंक
घ– संस्कृत –गद्य मन्दाकिनी	30 (35) अंक

परीक्षक के लिए निर्देश :–
1 परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करें ।
2 सभी प्रश्नों में दो विकल्प दिए जायें ।

अनुवाद तथा रचना के लिए सहायक पुस्तकें :–
1 संस्कृत रचनानुवाद–कौमुदी,तरणीश झा ।
प्रकाशक –अलीगंज, रेलवे,क्रासिंग,सीतापुर रोड लखनऊ ।
2 अनुवाद–चन्द्रिका या बृहद् अनुवाद–चन्द्रिका। लेखक 'चक्रधर हंस
प्रकाशक –मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ।
3 रूपचन्द्रिका अथवा रूपसारिका ।

विशेष :– प्रस्तुत कक्षा में संस्कृतानुवाद अनुच्छेद –रचना तथा अशुद्धिशोधन के लिए शास्त्री प्रथम वर्ष के इसी पत्र में निर्धारित प्रकरणों की आवृत्ति कराते हुए पुनः नियमों के साथ विशेषज्ञान तथा प्रयोग कराना अपेक्षित है । कर्मवाच्य के प्रयोग का अभ्यास, कृत्य तथा उक्त प्रत्यान्तों और लट् के अतिरिक्त लृट् , लङ् और लोट् लकारों की भाव–कर्म–क्रियाओं के साथ कराया जाए । नए व्यावहारिक शब्द भी कण्ठस्थ करवाये जाएँ ।

पाठ्य–विषय तथा अंक–विभाजन

क– पदज्ञानपूर्वक वाक्यज्ञान/अनुवाद :
1 सुबन्तरूपस्मरण 1–11 में से 8 शब्दों के निर्दिष्ट विभक्तियों में 24 रूप ।
नोट :– प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष के इसी पत्र में निर्धारित शब्द रूपों की आवृत्ति के लिए 3(3) अंक तथा 5(5) अंक निम्न शब्दों के रूपस्मरण के लिए निर्धारित हैं ।
विश्वपा, प्रधी , सुधी , श्री , स्त्री ,प्राञ्च्, प्रत्यङ्, त्विट् , वणिज् ,सम्राज, स्रज, समिध,सीमन, श्वन्, मघवन्, पूषन्, पथिन्,शर्मन्, अहन्, ककुभ्, गिर्, पुर, निश, दिवस्, प्रावृष्,चन्द्रमस्, पुम्स्, लघीयस्, श्रेयस्, अप्सरस, आशिस्, हविस्, अनुड्वह् , उपानह्
2 तिङन्तरूपस्मरण 14 से 10 धातुओं के निर्दिष्ट लकारों के निर्दिष्ट पुरूषों में

कुल 30 रूप । 5(10) अंक

नोट :– प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष में अनुवाद के पत्र निर्धारित धातुओं के लट् , लृट ,लड़्. तथा लोट लंकारों के रूपों की आवृति के लिए 4 अंक इन्हीं धातुओं के शेष लंकारों के तिड़न्त रूपों को कण्ठस्थ करने के लिए 6 अंक निर्धारित हैं ।

3 विभिन्न प्रकरणों से सम्बन्धित पांच या छः पदों वाले वाक्यों का संस्कृत में शब्दानुवाद । सात में से पांच वाक्य । 12(12) अंक

4 पांच –छः वाक्यों के एक हिन्दी – गद्य भाग का संस्कृत में अनुवाद 5(10) अंक

5 कर्तृकर्मवाच्य, उपपदविभक्ति, विशेषण और कृदन्तों –क्त–कृतवतु– शतृ–शानच–ल्यप्–कृत्य प्रत्यान्तों के प्रयोग से सम्बन्धित दस अशुद्धवाक्यों का संशोधन । 10(10)अंक

6 क – दो में से किसी एक अपठित एवं व्यवहारिक विषय पर लगभग 70 शब्दों में स्वरचित संस्कृत में अनुच्छेद लेखन । 5(10) अंक

ख – स्वरचरित संस्कृत में पत्र लेखन 5 (5) अंक

संस्कृत गद्य–मन्दाकिनी :–

1 क – पांच गद्य–वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद 5(5) अंक

ख– तीन भावगर्भित गद्यांशों की व्याख्या 6(6) अंक

ग – एक गद्य भाग का हिन्दी में अनुवाद 5(7) अंक

2 क– बारह समस्तपदों का विग्रह 6(6) अंक

ख– छः कठिन शब्दों के अर्थ 3(3) अंक

3 समीक्षात्मक प्रश्न संस्कृत में पाठसार अथवा कवि तथा उसकी गद्य रचना का संक्षिप्त परिचय । 5(8) अंक

परीक्षक के लिए निर्देश :–

1 परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करें ।

2 सभी प्रश्नों में दो विकल्प दिए जायें ।

चतुर्थ पत्र : दर्शन, उपनिषद् तथा संस्कृत साहित्य परिचय :

पूर्णांक
रेगुलर – 80
प्राईवेट – 100

क श्रीमदभगवद्गीता–केवल तृतीय , एकादश, द्वादश तथा चतुर्दश अध्ययन । 24 (30) अंक

ख कठोपनिषद् 14 (20) अंक

ग संस्कृत–साहित्य परिचय 42 (50) अंक

पाठ्य–विषय तथा अंक–विभाजन

क श्रीमदभगवद्गीता:

1 छः में से चार श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद तथा भावार्थ 16 (20) अंक

2 अध्यायों में विषयों पर आधारित लघु–निबन्धात्मक प्रश्न 8 (10) अंक

ख कठोपनिषद् :

1– तीन में से दो श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद तथा भावार्थ 6 (12) अंक

2 –उपनिषद् में आए विषयों पर आधारित लघु निबन्ध 8 (8) अंक

ग संस्कृत साहित्य परिचय :

1– एक या दो शब्दों में समाप्य अतिलघु–उत्तरात्मक

20 प्रश्नों के उत्तर — 10 (10) अंक

2 – एक या दो वाक्यों में देय लघुत्तरात्मक दस प्रश्नों के उत्तर — 10 (10) अंक

3– दो प्रसिद्ध कवियों / लेखकों पर संक्षिप्त परिचय — 11 (15) अंक

4– दो प्रसिद्ध रचनाओं पर टिप्पणी — 11 (15) अंक

परीक्षक के लिए निर्देश :–

1 परीक्षक के लिए निर्देश है कि वह प्राईवेट विद्यार्थियों के लिए अंकों का उल्लेख कोष्ठों में करें ।

2 सभी प्रश्नों में दो विकल्प दिए जाये ।

पंचम पत्र : अंग्रेजी

पाठ्यक्रम – हिमाचल प्रदेश की 10+2 की बारहवीं कक्षा के अंग्रेजी विषय के समान ।

षष्ठ पत्र : अतिरिक्त ऐच्छिक

विषय : हिन्दी, इतिहास अथवा राजनीति शास्त्र ।

पाठ्यक्रम : हिमाचल प्रदेश की 10+2 की बारहवीं कक्षा के विषय के समान ।